30 जनवरी अब तक 'गांधी निर्वाण दिवस है', आगे 'गोडसे गौरव दिवस' हो जाएगा

हरिशंकर परसाई

गोडसे को भगत सिंह का दर्जा देने की कोशिश चल रह रही है। गोडसे ने हिंदू राष्ट्र के विरोधी गांधी को मारा था। गोडसे जब भगत सिंह की तरह राष्ट्रीय हीरो हो जाएगा, तब तीस जनवरी का क्या होगा?

यह चिट्ठी महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी को पहुंचे। महात्माजी, मैं न संसद-सदस्य हूं, न विधायक, न मंत्री, न नेता। इनमें से कोई कलंक मेरे ऊपर नहीं है। मुझमें कोई ऐसा राजनीतिक ऐब नहीं है कि आपकी जय बोलूं। मुझे कोई भी पद नहीं चाहिये कि राजघाट जाऊं। मैंने आपकी समाधि पर शपथ भी नहीं ली।

आपका भी अब भरोसा नहीं रहा। पिछले मार्च में आपकी समाधि मोरारजी भाई ने भी शपथ ली थी और जगजीवन राम ने भी। मगर बाबू जी रह गए और मोरारजी प्रधानमंत्री हो गए। आखिर गुजराती ने गुजराती का साथ दिया।

जिन्होंने आपकी समाधि पर शपथ ली थी उनका दस महीने में ही 'जिंदाबाद' से 'मुर्दाबाद' हो गया। वे जनता से बचने के लिए बाथरूम में ही बिस्तर डलवाने लगे हैं। मुझे अपनी दुर्गति नहीं करानी। मैं कभी आपकी समाधि पर शपथ नहीं लूंगा। उसमें भी आप टांग खींच सकते हैं।

आपके नाम पर सड़कें हैं- महात्मा गांधी मार्ग, गांधी पथ। इन पर हमारे नेता चलते हैं। कौन कह सकता है कि इन्होंने आपका मार्ग छोड़ दिया है। वे तो रोज महात्मा गांधी रोड पर चलते हैं।

इधर आपको और तरह से अमर बनाने की कोशिश हो रही है। पिछली दिवाली पर दिल्ली के जनसंघी शासन ने सस्ती मोमबत्ती सप्लाई करायी थी। मोमबत्ती के पैकेट पर आपका फोटो था। फोटो में आप आरएसएस के ध्वज को प्रणाम कर रहे हैं। पिछे हेडगेवार खड़े हैं।

एक ही कमी रह गयी। आगे पूरी हो जायेगी। अगली बार आपको हाफ पैंट पहना दिया जायेगा और भगवा टोपी पहना दी जायेगी। आप मजे में आरएसएस के स्वयंसेवक के रूप में अमर हो सकते हैं। आगे वही अमर होगा जिसे जनसंघ करेगा।

कांग्रेसियों से आप उम्मीद मत कीजिये। यह नस्ल खत्म हो रही है। आगे गड़ाये जाने वाले में कालपत्र में एक नमूना कांग्रेस का भी रखा जाएगा, जिससे आगे आनेवाले यह जान सकें कि पृथ्वी पर एक प्राणी ऐसा भी था। गैंडा तो अपना अस्तित्व कायम रखे है लेकिन कांग्रेसी नहीं रख सका।

मोरारजी भाई भी आपके लिए कुछ नहीं कर सकेंगे। वे सत्यवादी हैं। इसलिए अब वे यह नहीं कहते कि आपको मारने वाला गोडसे आरएसएस का था।

यह सभी जानते हैं कि गोडसे फांसी पर चढ़ा, तब उसके हाथ में भगवा ध्वज था और होठों पर संघ की प्रार्थना- नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि। पर यही बात बताने वाला गांधीवादी गाइड दामोदरन नौकरी से निकाल दिया गया। उसे आपके मोरारजी भाई ने नहीं बचाया।

मोरारजी सत्य पर अटल रहते हैं। इस समय उनके लिए सत्य है प्रधानमंत्री बने रहना। इस सत्य की उन्हें रक्षा करनी है। इस सत्य की रक्षा के लिए जनसंघ का सहयोग जरूरी है। इसलिए वे यह झूठ नहीं कहेंगे कि गोडसे आरएसएस का था। वे सत्यवादी है।

तो महात्माजी, जो कुछ उम्मीद है, बाला साहब देवरास से है। वे जो करेंगे वही आपके लिए होगा। वैसे काम चालू हो गया है।

गोडसे को भगत सिंह का दर्जा देने की कोशिश चल रह रही है। गोडसे ने हिंदू राष्ट्र के विरोधी गांधी को मारा था। गोडसे जब भगत सिंह की तरह राष्ट्रीय हीरो हो जायेगा, तब तीस जनवरी का क्या होगा? अभी तक यह 'गांधी निर्वाण दिवस है', आगे 'गोडसे गौरव दिवस' हो जायेगा। इस दिन कोई राजघाट नहीं जायेगा, फिर भी आपको याद जरूर किया जायेगा।

जब तीस जनवरी को गोडसे की जय-जयकार होगी, तब यह तो बताना ही पड़ेगा कि उसने कौन-सा महान कर्म किया था। बताया जायेगा कि इस दिन उस वीर ने गांधी को मार डाला था। तो आप गोडसे के बहाने याद किए जायेंगे। अभी तक गोडसे को आपके बहाने याद किया जाता था।

एक महान पुरुष के हाथों मरने का कितना फायदा मिलेगा आपको? लोग पूछेंगे- यह गांधी कौन था? जवाब मिलेगा- वही, जिसे गोडसे ने मारा था।

एक संयोग और आपके लिए अच्छा है। 30 जनवरी 1977 को जनता पार्टी बनी थी। 30 जनवरी जनता पार्टी का जन्मदिन है। अब बताइये, जन्मदिन पर कोई आपके लिए रोएगा? वह तो खुशी का दिन होगा।

आगे चलकर जनता पार्टी पूरी तरह जनसंघ हो जायेगी। तब 30 जनवरी का यह महत्त्व होगा- इस दिन परमवीर राष्ट्रभक्त गोडसे ने गांधी को मारा। इस पुण्य के प्रताप से इसी दिन जनता पार्टी का जन्म हुआ, जिसने हिंदू राष्ट्र की स्थापना की।

आप चिंता न करें, महात्माजी! हमारे मोरारजी भाई को न कभी चिंता होती है और न वे कभी तनाव अनुभव करते हैं। चिंता क्यों हो उन्हें? किसकी चिंता हो? देश की? नहीं।

उन्होंने तो ऐलान कर दिया है- राम की चिड़िया, राम के खेत! खाओ री चिड़िया, भर-भर पेट! तो चिड़िया खेत खा रही है और मोरारजी को कोई चिंता, कोई तनाव नहीं है।

बाकी भी ठीक चल रहा है। आप जो लाठी छोड़ गए थे, उसे चरण सिंह ने हथिया लिया है।

चौधरी साहब इस लाठी को लेकर जवाहरलाल नेहरू का पीछा कर रहे हैं। जहां नेहरू को पा जाते हैं, एक-दो हाथ दे देते हैं। जो भी नेहरू की नीतियों की वकालत करता है, उसे चौधरी आपकी लाठी से मार देते हैं।

उस दिन चंद्रशेखर ने कहीं कह दिया कि नेहरू की उद्योगीकरण की नीति सही थी और उससे देश को बहुत फायदा हुआ है। चरण सिंह ने सुना तो नौकर से कहा- अरे लाना गांधीजी की लाठी!

लाठी को लेकर चंद्रशेखर को मारने निकल पड़े। बेचारे बचने के लिए थाने गए तो थानेदार ने कह दिया- पुलिस चौधरी साहब की है। वे अगर आपको मार रहे हैं तो हम नहीं बचा सकते।

आप हरिजन वगैरह की चिंता मत कीजिये। हर साल कोटा तय रहता है कि इस साल गांधी जयंती तक इतने हरिजन मरेंगे। इस साल 'कोटा' बढ़ा दिया गया था, क्योंकि जनता पार्टी के नेताओं ने राजघाट पर शपथ ली थी। उनकी सरकार बन गयी। उन्हें शपथ की लाज रखनी थी, इसीलिये हरिजनों को मारने का 'कोटा' बढ़ा दिया गया। खुशी है कि 'कोटे' से कुछ ज्यादा ही हरिजन मारे गए। आप बेफिक्र रहें, आपका यश किसी न किसी रूप में सुरक्षित रहेगा

बंगाल की जिस आईपीएस पर छापे से सीआईडी को 2.5 करोड़ मिले थे, वो बीजेपी में आ गईं

भारती घोष ने बीजेपी जॉइन कर लिया. पश्चिम बंगाल में उनके ऊपर केस दर्ज़ है. एक टाइम था, जब भारती ममता बनर्जी को मां कहती थीं और ममता उन्हें अच्छी बच्ची बुलाती थीं. छापे के वक्त की और भाजपा जॉइन करने की उनकी फोटो मिलाकर वायरल हो रही है.

पूर्व IPS अधिकारी भारती घोष अब बीजेपी की हैं. 4 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली में पार्टी ने उन्हें अपना लिया. इस मौके पर मौजूद थे रवि शंकर प्रसाद, कैलाश विजयवर्गीय और नए-नए बीजेपी में आए मुकुल रॉय. मुकुल और भारती में एक चीज कॉमन है- उनका अतीत. दोनों एक टाइम ममता बनर्जी के बेहद करीबी थे. एक समय था, जब ममता भारती को 'बेटी' कहती थीं. भारती कहतीं, ममता मां हैं. ममता कहतीं, भारती 'अच्छी बच्ची' हैं. फिर दोनों के बीच चीजें बिखरीं. भारती खुलेआम धमकाने लगीं ममता को. कहतीं, वो उनके राज़ खोल देंगी.

भारती के ऊपर पश्चिम बंगाल में जांच चल रही है. वहां की षट्ठष्ठ ने उनके खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी. उन्हें भगोड़ा घोषित किया था. फरवरी 2018 में चंदन मांझी नाम के एक शख्स ने भारती के खिलाफ वसूली और आपराधिक साज़शि रचने का इल्ज़ाम लगाया था. षट्ठष्ठ ने इस मामले की जांच के बाद कहा कि भारती के कई घरों पर छापेमारी की गई. उन घरों से बहुत सारा नकद और सोने के गहने बरामद हुए. कुल मिलाकर ढाई करोड़ का सामान मिलने की बात बताई गई थी.

भारती घोष कौन हैं?

भारतीय पुलिस सेवा (IPS) की अधिकारी थीं भारती. हावर्ड से मैनेजमेंट की पढ़ाई कर चुकी हैं. संयुक्त राष्ट्र की पीसकिपिंग मिशन में भारत की ओर से भेजे गए अधिकारियों में शामिल थीं. कोसोवो और बोस्निया जैसे जंग प्रभावित इलाकों में काम करने का अनुभव है उन्हें. ये सब करके वो बंगाल में पोस्टेड हुईं. वहां की CID में थीं. ममता ने उन्हें पश्चिमी मिदनापुर का स्क बना दिया. ये नक्सल प्रभावित इलाका था. भारती ने ममता को रिज़ल्ट दिया. इलाके का एक बड़ा माओवादी नेता कोटेश्वर राव मुठभेड़ में मारा गया. कई नक्सलियों ने सरेंडर भी किया. इस सबकी शाबाशी मिली भारती को.

भारती वैसे तो पुलिस अधिकारी थीं. मगर लोग कहते, वो सर्विस में रहकर तृणमूल कांग्रेस का काम करती हैं. विपक्षी पार्टियां भी भारती पर उंगली उठाती थीं. उनका कहना था कि भारती घोष पुलिस विभाग से ज्यादा ममता की सिपाही लगती हैं. लोग कहते कि भारती की तरक्की के पीछे भी यही वजह है.

चुनाव आयोग से भी पंगा हुआ

2014 के लोकसभा चुनाव. और फिर 2016 के विधानसभा चुनाव. दोनों ही बार भारती घोष के रवैये पर चुनाव आयोग को आपत्ति हुई. भारती पर चुनाव अधिकारियों को बहकाने, उन्हें प्रभावित करने का आरोप लगा. ये भी आरोप लगे कि वो अपने पद का बेजा इस्तेमाल कर तृणमूल को फायदा पहुंचा रही हैं. 2016 में चुनावी आचारसंहिता लागू होने के बाद वो ममता के राइट हैंड मुकुल रॉय से मिलीं. भारती उस समय भी मुकुल की करीबी थीं. इस मीटिंग के लिए चुनाव आयोग ने उन्हें फटकारा भी. मगर भारती पर कोई असर नहीं पड़ा. वो पॉलिटिकली करेक्ट दिखने की परवाह भी नहीं करती थीं.

ममता से कब छिटकीं?

मुकुल रॉय तृणमूल छोड़कर बीजेपी चले गए. उनका नाम आया था शारदा चिट फंड घोटाले में. CBI ने पूछताछ भी की उनसे. इसके बाद ही वो बीजेपी में आए. बीजेपी ने उन्हें बंगाल में पार्टी को मजबूत करने की जिम्मेदारी सौंपी. मुकुल की करीबी थीं भारती. तो बातें उड़ीं कि भारती भी मुकुल का हाथ बंटा रही हैं. इसके बाद भारती और ममता के रिश्ते बिगड़ने लगे.

आर-पार की नौबत कब आई?

पश्चिमी मिदनापुर में एक सीट है- सबांग. दिसंबर 2017 में यहां उपचुनाव हुए. तृणमूल ने सीट निकाल ली. बीजेपी तीसरे नंबर पर आई. मगर बीजेपी हारकर भी जीत गई थी. यूं कि उसका वोट शेयर 17 फीसद बढ़ गया था. ये बात हुई कि बीजेपी ममता के वोट बैंक में ही सेंध लगाकर इतना पा रही है. मानस भूनियान नाम के एक राज्यसभा सांसद हैं. पहले कांग्रेस में थे, फिर तृणमूल चले गए. वो सबांग के ही हैं. भारती घोष से उनका छत्तीस का आंकड़ा था. क्योंकि भारती जब विपक्षियों को सताती थीं, तब सताए जाने वालों में मानस भी थे. उपचुनाव के बाद उन्हें मौका मिला. उन्होंने ममता के कान भरे. कि बीजेपी का वोट शेयर बढ़ने की वजह हैं मुकुल रॉय. जिनकी मदद कर रही हैं भारती.

और फिर भारती ने इस्तीफ़ा दे दिया

कहते हैं कि फिर ममता ने जासूसी करवाई. खुफिया विभाग को लगाया. रिपोर्ट मिली कि भारती घोष गुपचुप बीजेपी नेताओं से मिलती हैं. उनकी मदद करती हैं. बस, फिर क्या था. भारती और ममता के बीच कोई स्कोप नहीं बचा था. ममता ने पश्चिम मेदिनीपुर के पुलिस अधीक्षक पद से उन्हें हटा दिया. तबादला देकर कहा राज्य सशस्त्र पुलिस में जॉइन करो. बैरकपुर जाओ. भारती ने इस्तीफ़ा दे दिया.

ममता के पुराने सिपहसालारों को भर्ती करने में लगी है बीजेपी

जजमेंट देना अच्छी बात नहीं. मगर भारती घोष का रेकॉर्ड खुद ही उनकी चुगली करता है. पहले उन्हें ममता के साथ होने में फायदा था. अब उन्हें बीजेपी के साथ जाने में फायदा दिख रहा है. बीजेपी बंगाल में पैर जमाने की कोशिश कर रही है. वैसे ही जैसे कभी तृणमूल कर रही थी. वेस्ट बंगाल के इतिहास से हमको एक बात मालूम है. वहां किसी पार्टी का दौर आता है. जैसे कभी कांग्रेस का था. फिर लेफ्ट का रहा. लंबे टाइम तक रहा. उससे लड़कर-भिड़कर तृणमूल आई. ये ममता का दौर है. तो क्या ऐसे ही बीजेपी का भी दौर आएगा?

इसका जवाब अभी कैसे दें. अभी तो बस ये बता सकते हैं कि बीजेपी फिलहाल ममता के पुराने सिपाहियों को जमा करती दिख रही है. वो उनके ही पुराने लोगों को उनके खिलाफ इस्तेमाल करने की सोच रही है. पहले जिनकी वो आलोचना करती थी, उन्हें अब अपना रही है. उनपर लगे आरोप, उनका विवादित रेकॉर्ड सब नज़रंदाज़ करके. बीजेपी का हाल ये है कि अगर अभी (हाइपोथिसिस) ममता खुद बीजेपी में आ जाएं, तो वो भी पाक साफ ठहरा दी जाएंगी.

-साइबर नजर

भाजपा समर्थक की छवि बनने से बेअसर हुए अन्ना हजारे

चरण सिंह राजपूत

नई दिल्ली। 2011 में अन्ना आंदोलन की तुलना जेपी आंदोलन से की गई थी। देश के सारे सामाजसेवी-कार्यकर्ता एक मंच पर आ गए थे। लोग अपने खर्च पर रामलीला मैदान पहुंच रहे थे। देश में एक बदलाव का माहौल था। यह आंदोलन लोकपाल बनाने को लेकर था। 2019 में फिर से लोकपाल की नियुक्ति को लेकर अन्ना हजारे एक बार फिर भूख हड़ताल पर बैठे हैं। उनके अनशन को चार दिन बीत चुके हैं। 2011 के आंदोलन और इस आंदोलन में धरती आसमान का अंतर है। उसमें हजारों लोग बिना स्वार्थ जुटे थे। तब देश ही नहीं विदेशों की मीडिया ने भी जबरदस्त कवरेज दी थी। तत्कालीन यूपीए सरकार हिल गई थी। लोकसभा में चर्चा होने लगी थी। हर कहीं अन्ना आंदोलन की चर्चा थी।

लेकिन इस बार अन्ना के साथ न तो जनता है और न ही मीडिया। सरकार का तो विचलित होने का मतलब ही नहीं बनता। ऐसा क्यों हो रहा है? क्यों अन्ना का अनशन लोगों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पा रहा है। इन सब बातों की वजह साफ है। अन्ना आंदोलन से लोगों ने बदलाव की उम्मीद की थी। लेकिन व्यवस्था का बदलाव हुआ नहीं। हां सत्ता का बदलाव जरूर हो गया। खुद उनके प्रिय शिष्य अरविंद केजरीवाल ने आंदोलन को भुनाकर दिल्ली की सत्ता कब्जा ली। इतना ही नहीं इन्होंने भी लोकपाल की नियुक्ति नहीं की।

मुख्यमंत्री बनने के बाद भी अरविंद केजरीवाल ने अन्ना के कई मंच शेयर किए पर अन्ना कुछ न कर पाए। यहां तक कि एक किसान धरने में आयोजकों के अरविंद केजरीवाल को मंच से उतारने के बावजूद उन्हें आगे से मंच पर चढ़ा लिया गया। 20 मिनट में केजरीवाल आयोजकों की मेहनत को लूट ले गए।यही हाल केंद्र में बनी मोदी सरकार का भी रहा। बाबा राम देव, सेनाध्यक्ष रहे वीके सिंह, और किरण बेदी जैसे लोग अन्ना आंदोलन में मुख्य भूमिका निभा रहे थे। अब किसी ने लोकपाल के गठन की बात नहीं की।

मोदी सरकार में मॉब लिंचिंग, दलित, किसान मजदूर उत्पीड़न के कितने मामले हुए। नोटबन्दी और जीएसटी में लोगों को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा। अन्ना हजारे केजरीवाल के खिलाफ तो कई बार बोले पर मोदी सरकार के खिलाफ उनका बोल नहीं निकला। ऐसा नहीं है कि लोग व्यवस्था परिवर्तन नहीं चाहते हैं। ऐसा नहीं है कि लोग लोकपाल का गठन नहीं चाहते हैं। सब चाहते हैं पर अब लोगों को अन्ना हजारे पर विश्वास नहीं है। कोई दूसरा नायक चाहिए जो लोगों के उम्मीदों पर खरा उतरे। लोगों को लगता है कि अन्ना आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन के लिए नहीं बल्कि सत्ता परिवर्तन के लिए हुआ था।

भाजपा ने बाबा राम देव को आगे कर यूपीए सरकार के खिलाफ अन्ना हजारे का इस्तेमाल किया था। हां वह बात दूसरी है कि अरविंद केजरीवाल भी अपनी दूरदर्शिता के चलते इस आंदोलन का फायदा उठा ले गए। अब लोगों और मीडिया को ऐसा लगता है कि 2019 में मोदी सरकार की नाकामियों के चलते सत्ता परिवर्तन होते देख भाजपा के समर्थक संगठन फिर से अन्ना हजारे को ले आये हैं। क्योंकि अन्ना हजारे का चेहरा कांग्रेस विरोधी है। इसलिए इन लोगों को लगता है कि आंदोलन के स्वरूप लेने के बाद भाजपा नहीं बल्कि कांग्रेस के खिलाफ माहौल बनेगा। ये लोग भूल रहे हैं कि अब समय बदल चुका है। अन्ना की इमेज भाजपा एजेंट की बन गई है। यही वजह है कि उनका अनशन प्रभावशाली नहीं हो पा रहा है।

यह होती है जनता की अपेक्षाओं पर खरा न उतरने की दुर्गति। जो जनता आसमान पर पहुंचाती है वही जमीन पर भी ला पटकती है। दिल्ली जंतर मंतर पर अन्ना समर्थक एक दिन धरना करके रह गए। करते भी क्या। कोई आया ही नहीं। ये वही अन्ना हजारे हैं जो जब दिल्ली में अनशन पर बैठे थे तो जनता के साथ ही मीडिया ने हाथोंहाथ लिया था।

उस समय अन्ना आंदोलन की तुलना जयप्रकाश आंदोलन से की गई थी। पर हुआ क्या। जयप्रकाश नारायण सत्ता परिवर्तन के लिए सड़कों पर उतरे थे और उन्होंने जनता पार्टी की सरकार बनवाकर अपना संकल्प पूरा कर दिखया। अन्ना हजारे व्यवस्था परिवर्तन के लिये सड़कों पर उतरे थे। क्या हुआ? देश में मोदी सरकार बनने के बाद चुप बैठ गए। ऐसा लग रहा था कि जैसे मोदी सरकार ने उन्हें पुरस्कृत कर घर बैठा दिया था। कितने युवा इस आंदोलन से कुछ अच्छा होने की उम्मीद पालकर नोकरी छोड़कर आंदोलन से जुड़ गए थे। सबको निराशा ही लगी। आंदोलन का फायदा अरविंद केजरीवाल टीम और भाजपा ने उठा लिया।

नरेंद्र मोदी ने न तो गुजरात का मुख्यमंत्री रहते वहां लोकायुक्त नियुक्त किया था और न ही प्रधानमंत्री बनने के बाद कोई इस तरह का प्रयास केंद्र में किया। अन्ना हजारे चुप्पी साधे बैठे रहे। अब जब जल्द ही लोकसभा चुनाव होने वाले हैं तो फिर से लोकपाल याद आने लगा है। मतलव आंदोलन अगली सरकार के लिए है। सोशल मीडिया पर भी 2011 और 2019 के अन्नाल के आंदोलन की तुलनाएं हो रही हैं। लोग अखबारों की कटिंग लगा लगाकर कार्यक्रमों की तुलना कर रहे हैं। जिन अखबारों के पन्ने अन्ना आंदोलन से भरे रहते थे वे अखबार अब कहीं सिंगल कालम में अन्ना हजारे को जगह दे रहे हैं। चैनलों का भी यही हाल है। मतलब समय बदल चुका है।